Folk-song & Dances of KUMAUN

CHHAPELI NRITYA (Kumaun)

कुमाऊँनी

लोक गीत एवं नृत्य

FOLK-SONGS AND DANCES
of
KUMAUN

Kumaun, a naturally beautiful part of the mountain terrain of Uttar Pradesh, is an attractive spot for today's tourists, and it offers a typical example of the culture of the Himalayan region. This place covering an area of 8000 square miles includes Nainital, Almora, and Pithoragarh districts and the place abounds in rich traditions of folk-songs, folk-stories, and ballads. They are "sanskaar geet", songs dominated by dance, seasonal songs and so on.

The "sanskar geet" include traditional geets as well as songs for special occasions, such as "Shakuna Khar" and "Nyutno". Among the special songs are those in celebration of births, marriages and other auspicious occasions.

"The Chholiya nritya" of Kumaun reveal the martial skills of the people, and these are performed during marriage-processions in front of the bridegroom's party. Brandishing swords and shields, the dancers perform with special "mudras" (hand gestures) to the accompaniment of instruments like Dhol, Damau, Ransingas, Turahi, etc creating the atmosphere of a victory-march. Among other dances of Kumaun, "Jhoda", "Chaachri" and "Chhapeli" are quite popular. "Jhoda" can be based on religion or emotions, or topical. Costumes are the main attraction of "Chaachri" "Chhapeli" has romantic contents and is danced in duets.

"Bhagnaul" and "Nyoli" are sung as solos. Among seasonal or work-associated songs are "Bair" and "Hudakya baul" geets, while "Jaagar" forms an important "dharmic" geet. "Chaachri" of Danapur, "Jhumakya jhoda" and "Double Jhoda" are all varieties of folk-dances.

The instruments used to accompany Kumauni folk-dances are Dhol, Damau, Hudka, Ththaali, Ransinga, Thurahi, Mashak-baja, Murali, Algoza etc.

Urmil Kumar Thapliyal

Chholiya Nritya , Almora

कुमाऊंनी लोक गीत एवं नृत्य

कुमाऊं, उत्तर प्रदेश के पर्वतीय भू भाग का एक अत्यन्त प्रकृति–पूर्ण, हिमालय संस्कृति का प्रतीक रूप और आधुनिक पर्यटन का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। लगभग आठ हजार वर्गमील के इस 'मंडल' में नैनीताल, अलमोड़ा, और पिथौरागढ़ जिले शामिल हैं। यहाँ लोकगीतों, के साथ लोक कथाओं, कथा गीतों की समृद्ध परम्परा है। ये कथा–गीत संस्कार, नृत्य प्रधान, संवाद अनुभूति व तर्क प्रधान तथा ऋतु गीत कहे जाते हैं। संस्कार गीतों में पारम्परिक गीत और विशेष अवसरों के गीत शामिल हैं। इनमें 'शकुनाश्वर' और 'न्यूतणो' प्रमुख हैं। विशेष गीतों में जन्म, विवाह व मांगलिक अवसरों के गीत हैं।

कुमाऊं के 'छोलिया' नृत्य में, यहाँ की युद्ध कौशल परम्परा की झलक मिलती है। ये विवाह के अवसर पर, बारात के साथ आगे चल कर किया जाता है। तलवार और ढ़ाल लिये नर्त्तक, ढोल, दमौ, रणसिंहा, और तुरही के संचालन में विशिष्ट युद्ध मुद्रायें बना कर, विवाह को विजयोत्सव का रूप देते हैं। कुमाऊं के अन्य नृत्यों में 'झोडा', 'चोंचरी', और 'छपेली' बहुत प्रचलित हैं। 'झोडो' के तीन रूप हैं। धार्मिक, भावमूलक और सामयिक। 'चोंचरी' में वेशभूषा का आकर्षण है। 'छपेली' प्रेम–श्रृंगार का युगल नृत्य है। एकल गीतों की परम्परा में यहाँ दो गायन शैलियां प्रमुख है– भागनौल और न्योली। अन्य गीतों में बैर तथा हुडक्या–बौल गीत शैलियां हैं, जो ऋतु तथा कृषि गीतों के अर्न्तगत आती हैं। धार्मिक और जागरण गीतों में यहाँ 'जागर' की बहुत प्रतिष्ठा है। दानापुर को 'चोंचरी' 'झुमक्या झोडा', 'डवल झोडा' इन लोक नृत्यों के सहायक रूप हैं।

कुमाऊंनी वाद्यों में ढ़ोल, दमौ, हुड़का, थाली, रणसिंघा, तुरही, मशक बाजा, मुरली, अलगांजा आदि प्रमुख व प्रचलित वाद्य है।

छाया चित्र : **राकेश सिन्हा** **उर्मिल कुमार थपलियाल**
अंग्रेजी अनुवाद : **सुशीला मिश्रा**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. के लिये निदेशक भारतेन्दु नाट्य अकादमी ए-2/58, गोमतीनगर लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष-386389 द्वारा मुद्रित।